p18 Aufgabe1 zum 07.01.2022

Bitte übersetzt in der rechten Spalte der gegebenen Reihe nach.

|  |  |
| --- | --- |
| οἷον γὰρ γέγονεν,  |  |
| ἀκοῦσαι χρὴ τοὺς [333δ] ἐμὲ παρακαλοῦντας  |  |
| πρὸς τὰ νῦν πράγματα.  |  |
| ἦλθον Ἀθηναῖος ἀνὴρ ἐγώ,  |  |
| ἑταῖρος Δίωνος, σύμμαχος αὐτῷ,  |  |
| πρὸς τὸν τύραννον,  |  |
| ὅπως ἀντὶ πολέμου φιλίαν ποιήσαιμι·  |  |
| διαμαχόμενος δὲ τοῖς διαβάλλουσιν ἡττήθην.  |  |
| πείθοντος δὲ Διονυσίου  |  |
| τιμαῖς καὶ χρήμασιν  |  |
| γενέσθαι μετ᾽ αὐτοῦ ἐμὲ  |  |
| μάρτυρά τε καὶ φίλον |  |
| πρὸς τὴν εὐπρέπειαν  |  |
| τῆς ἐκβολῆς τῆς Δίωνος  |  |
| αὐτῷ γίγνεσθαι,  |  |
| τούτων δὴ τὸ πᾶν διήμαρτεν.  |  |
| ὕστερον δὲ δὴ κατιὼν οἴκαδε [333ε]  |  |
| Δίων [ἀδελφὼ](https://www.zusokrates.de/fileadmin/Griechisch/Konjugation/K_D_Dual.pdf) δύο προσλαμβάνει Ἀθήνηθεν,  |  |
| οὐκ ἐκ φιλοσοφίας γεγονότε φίλω,  |  |
| ἀλλ᾽ ἐκ τῆς περιτρεχούσης ἑταιρίας ταύτης  |  |
| τῆς τῶν πλείστων φίλων,  |  |
| ἣν ἐκ τοῦ ξενίζειν τε  |  |
| καὶ μυεῖν καὶ ἐποπτεύειν[[1]](#endnote-1)  |  |
| πραγματεύονται,  |  |
| καὶ δὴ καὶ τούτω  |  |
| τὼ συγκαταγαγόντε αὐτὸν φίλω  |  |
| ἐκ τούτων τε καὶ ἐκ  |  |
| τῆς πρὸς τὴν κάθοδον ὑπηρεσίας  |  |
| [ἐγενέσθην](https://www.zusokrates.de/fileadmin/Griechisch/Konjugation/K_D_Dual.pdf) ἑταίρω·  |  |
| ἐλθόντες [334α] δὲ εἰς Σικελίαν,  |  |
| ἐπειδὴ Δίωνα ᾔσθοντο διαβεβλημένον  |  |
| εἰς τοὺς ἐλευθερωθέντας ὑπ᾽ αὐτοῦ Σικελιώτας  |  |
| ὡς ἐπιβουλεύοντα γενέσθαι τύραννον,  |  |
| οὐ μόνον τὸν ἑταῖρον  |  |
| καὶ ξένον προύδοσαν,  |  |
| ἀλλ᾽ οἷον τοῦ φόνου αὐτόχειρες ἐγένοντο,  |  |
| ὅπλα ἔχοντες ἐν ταῖς χερσὶν  |  |
| αὐτοὶ τοῖς φονεῦσι παρεστῶτες ἐπίκουροι.  |  |
| καὶ τὸ μὲν αἰσχρὸν καὶ ἀνόσιον  |  |
| οὔτε παρίεμαι ἔγωγε οὔτε τι λέγω |  |
| —πολλοῖς γὰρ καὶ ἄλλοις  |  |
| ὑμνεῖν ταῦτα ἐπιμελὲς [334β]  |  |
| καὶ εἰς τὸν ἔπειτα μελήσει χρόνον— |  |
| τὸ δὲ Ἀθηναίων πέρι λεγόμενον,  |  |
| ὡς αἰσχύνην οὗτοι περιῆψαν τῇ πόλει,  |  |
| ἐξαιροῦμαι·  |  |
| φημὶ γὰρ κἀκεῖνον Ἀθηναῖον εἶναι  |  |
| ὃς οὐ προύδωκεν τὸν αὐτὸν τοῦτον,  |  |
| ἐξὸν χρήματα καὶ ἄλλας τιμὰς πολλὰς λαμβάνειν.  |  |
| οὐ γὰρ διὰ βαναύσου φιλότητος  |  |
| ἐγεγόνει φίλος,  |  |
| διὰ δὲ ἐλευθέρας παιδείας κοινωνίαν,  |  |
| ᾗ μόνῃ χρὴ πιστεύειν  |  |
| τὸν νοῦν κεκτημένον  |  |
| μᾶλλον ἢ συγγενείᾳ ψυχῶν καὶ σωμάτων·  |  |
| ὥστε οὐκ ἀξίω [334ξ] ὀνείδους  |  |
| γεγόνατον τῇ πόλει  |  |
| τὼ Δίωνα ἀποκτείναντε,  |  |
| ὡς ἐλλογίμω πώποτε ἄνδρε γενομένω. |  |

Ende p18

1. Die μύησις ist die erste Stufe der Einweihung in die Mysterien, die ἐποπτία die zweite Stufe. [↑](#endnote-ref-1)